श्री

[illegible]

बालबोधिनी टीका ॥

श्री[illegible] श्री विदेहि[illegible]

[illegible] श्रीमन्मह

[illegible]

श्रीमद्राम[illegible] श्रीराम

घाटनिवासिना[illegible] श्री[illegible]

[illegible] बालबो

धिनी टीका [illegible] संस्कृ

ता[illegible] श्री[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] माघमासे अमावा

स्यां श्री अयोध्यायां

विदेहि[illegible]लये मुद्रि

तमभूत्

और

सर्व[illegible]

रजिस्टरी

[illegible] है

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमतेरामानुजायनमः ॥ श्रीमद्रामंनमस्कृत्य
तथारामानुजंगुरुम् ॥ तथावाचस्पतिंचैवक
पिलादीन्महामुनीन् ॥ १ ॥ कुर्वेलोकहिता
र्थायटीकांप्राकृतभाषया ॥ सांख्यस्यका
रिकायावैसान्वयांबालबोधिनीम् ॥ २ ॥

मूलम्

अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णां
बह्वीःप्रजाःसृजमानांनमामः ॥
अजायेतांजुषमाणाभजन्तेज
हत्येनांभुक्तभोगानुमन्यान् ॥ १ ॥

अन्वयः

वयं गुरुशिष्याः अजां नमामः कथंभूतां एकां
लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीः प्रजाः सृजमानां
ये बद्धाः अजा जुषमाणां तांभजंते येमु

का: अजा भुक्तभोगाम् एनां जहति तान् सर्वान् वयंनुमः इत्यन्वयः॥

टीका

सांख्यकारिका के व्याख्या करने वाले वाचस्पतिमिश्रने॥ वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण करते हैं॥ अजामित्यादि श्लोकसे॥ अजन्मा और एक और राजस सात्विक तामस रूप और त्रिगुणात्मक बहुत प्रजाके सृष्टि करनेवाली प्रकृतिको हम सब नमस्कार करते हैं और अजन्मा अनंत बद्ध जीव जो सेवा करनेवाली प्रकृति को भजते हैं और अजन्मा अनंत मुक्त जीव जो यह प्रकृति के भोग को भोगकर त्याग दिये हैं ते हम सबको हम सब गुरु शिष्य नमस्कार करते हैं॥१॥

मूलम्

कपिलाय महामुनये शिष्याय तस्य चासुरये॥ पंचशिखाय तथेश्वर कृष्णाय ते नमः स्याम॥२॥

अन्वयः

महामुनये कपिलाय च पुनः तस्य शि
ष्याय आसुरये तस्य शिष्याय पंचशि
खाय तथा तस्य शिष्याय ईश्वरकृष्णाय
एते वयं गुरुशिष्याः नमस्यामः ॥ २ ॥

टीका

महामुनि कपिलदेवजी के निमित्त तिन
के शिष्य आसुरि ऋषि के अर्थ तिन के
शिष्य पंचशिखाचार्य के अर्थ और ति
नके शिष्य ईश्वरकृष्ण के अर्थ एह हम
सब गुरुशिष्य नमस्कार करते हैं ॥ २ ॥

मूलम्

दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा
तदपघातके हेतौ ॥ दृष्टे सापा
र्थाचेन्नैकांतात्यंततोऽभावात्
॥ १ ॥

अन्वयः

दुःखत्रयाभिघातात् तदपघातके हेतौ
प्रकृतिपुरुषविवेके मुमुक्षुभिः जिज्ञासा
कर्त्तव्या दृष्टे सुकरे उपाये विद्यमाने सा
जिज्ञासा अपार्था चेन्न एकांतात्यंततोऽ
भावात् एकांतः दुःखनिवृत्तेरवश्यंभा
वः अत्यंतः निवृत्तस्य दुःखस्य पुनरनु

स्यादः तयोरभावात् इत्यन्वयः ॥१॥

टीका

अध्यात्म अधिभूत अधिदेव ॥ एह तीनो दुःखकेसंबंधतें नानापीडाते तेतीनोदुःखकेनिवृत्तिकेहेतु प्रकृतिपुरुषकेविवेककेनिमित्त मुमुक्षुकोज्ञानकी इच्छा करनाचाहिये यदि कहोकि तीनोदुःखकेनिवृत्तिकेनिमित्त औषधि औरसुंदरीस्त्री औरनीति शास्त्रके अभ्यास औरमणिमंत्रादिक सुगमउपायकेविद्यमान होयेतें सोजिज्ञासा व्यर्थहै सोनहीं एहसबउपायतें अवश्यदुःखछूट जाय औरछूटकरपुनः नहोय एहदोनोबातकेअभावतें ॥१॥

मूलम्

दृष्टवदानुश्रविकः सह्यविशुद्धिक्षयातिशययुक्तः ॥ नद्वि परीतः श्रेयान् व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात् ॥२॥

अन्वयः

आनुश्रविकः वेदोक्तस्वर्गलोकः दृष्टवद्

वति हि यस्मात् सस्वर्गलोक अविशुद्धिक्ष
यातिशययुक्तः तस्मात् स्वर्गादेर्विपरीतः प्र
कृतिपुरुषविवेकः श्रेयान् कस्मात् व्यक्ताव्य
क्तज्ञविज्ञानात् ॥२॥

टीका

आनुश्रविकनाम वेदोक्त स्वर्गादिक लोकभी
एही लोकके सदृश है जाते सो स्वर्ग लोकभी
अविशुद्धिः दुःखमिश्रितसुख और क्षय
और अपने ते अधिक देखकर दुःखित हो
ना एह तीनो अवगुण करके युक्त है ताते
ते स्वर्गादिकते भिन्न प्रकृतिपुरुषके विवेक
श्रेष्ठहै काहेते व्यक्त महदादिक और अ
व्यक्त मूलप्रकृति और ज्ञः आत्मा एह तीनो
के विज्ञानते ॥२॥

मूलम्

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदा
द्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त ॥
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृ
तिर्न विकृतिः पुरुषः ॥ ३

अन्वयः

मूलप्रकृतिः अविकृतिर्भवति महदाद्या

महदहङ्कारपञ्च तन्मात्राः सप्तप्रकृति विकृतयः भवन्ति तुपुनः षोड़शक पञ्च ज्ञानें द्रियाणि पंच कर्मेंद्रियाणि एकंमनः पञ्च महाभूतानि विकारोभवति पुरुषस्तु न प्रकृतिर्भवति नविकृतिर्भवति ॥ ३ ॥

टीका

मूलप्रकृति जिसके प्रधान और अव्यक्त अव्याकृत असत अविद्या और माया एह सबनाम हैं सो कोई का कार्य नहिं है और महदहंकार शब्द स्पर्श रूप रस गंध एह सात तत्व अपने ते पूर्व पूर्व के कार्य हैं और उत्तर उत्तर के कारण हैं और श्रोत्र त्वक् चक्षु जिह्वा घ्राण एह पञ्च ज्ञानेंद्रिय और वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ एह पञ्च कर्मेन्द्रिय और एक मन और पृथिवी जल तेज वायु आकाश पञ्चमहाभूत एह षोडश तत्व केवल कार्य हैं और पुरुष न कोई का कारण है न कोई का कार्य है ॥ ३ ॥

मूलम्

दृष्टमनुमानमाप्तवचनं चसर्वे

प्रमाणसिद्धत्वात् ॥ त्रिविधं
प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिःप्र
माणाद्धि ॥ ४ ॥

अन्वयः

प्रमाणंत्रिविधमिष्टंभवति तत्किम् द
ष्टम् अनुमानम् च पुनः आप्तवचनम् कु
तः एतावदेवप्रमाणम् उपमानादीनाम
पि पृथक् प्रमाणत्वात् सर्वप्रमाणसिद्ध
त्वात् यर्हि प्रकृतिपुरुषविवेकः श्रेयान्
तर्हि प्रमाणं किमर्थमिष्टंभवति हि यस्मा
त् प्रमेयसिद्धिः प्रमाणवद्भवति अतः
॥ ४ ॥

टीका

प्रमेयकेसिद्धिके निमित्त प्रमाण कहते हैं
प्रमाण तीन प्रकार का हमको इष्ट है सो कौ
न हैं प्रत्यक्ष अनुमान और आप्तवचन उ
पमानादिकके पृथक् प्रमाण होयते तीन
ही प्रमाण कैसे हैं सर्व प्रमाणया हि मेसि
द्ध होयते यदि प्रकृति पुरुष का विवेक क
ल्याणकरता है तब प्रमाण का कहना क्या
प्रयोजन है जाते प्रमेयरूप प्रकृति पुरुष कीसि
द्धि प्रमाणते होती हैं ताते ॥ ४ ॥ प्र

मूलम्

प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टं
त्रिविधमनुमानमाख्यातम् ॥
तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकमाप्तश्रुति
राप्तवचनं तु ॥ ५ ॥

अन्वयः

प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टं भवति यत् लिं
गलिंगिपूर्वकं अनुमानं तत् त्रिविधं भव
ति तु पुनः आप्तश्रुतिः आप्तवचनं भवति
॥ ५ ॥

टीका

प्रतिविषय जो इन्द्रिय तिसको अर्थमें संयो
ग संन्निकर्ष होनेते जो सात्विक बुद्धिका व्या
पार अध्यवसायरूप यथार्थ ज्ञान है सो दृष्ट
है और व्याप्यव्यापक धूम अग्निका ज्ञान
ते ज्ञानसहित जो अनुमान सो तीनप्र
कारका है पूर्ववत् शेषवत् सामान्यतो दृ
ष्ट इति किंतु पूर्ववत् अनुमान है सो द्वि
प्रकारका है वीत और अवीत अन्वय द्वा
रा जो वर्तमान सो वीत है जैसे वर्षा होय त
वसुकाल होय व्यतिरेक द्वारा वर्तमान
निषेधरूप सो अवीत है सोई शेषवत् है

जैसे वर्षा न होय न वसुकाल न होय, और जो पहिला दीन है सो द्वि प्रकार है दृष्टस्वलक्षण सामान्य विषय जो अनुमान सो पूर्ववत और दृष्टस्वलक्षणसामान्यविशेषविषय जो अनुमान सो सामान्यतोदृष्ट है आप्तवचन जो श्रुति स्मृति इतिहास पुराणादिक तिससे जो यथार्थ ज्ञान सो आप्तश्रुति कहाती है ॥ ५ ॥

मूलम्

सामान्यतस्तु दृष्टादतीन्द्रियाणा
प्रतीतिरनुमानात् ॥ तस्मादपि
चासिद्धम्परोक्ष, गमात्सिद्धम् ॥ ६ ॥ मा प्रा

अन्वयः

सामान्यतः पदार्थस्य घटपटादेः दृष्टात्तस्य
क्षात्प्रतीतिर्भवति तु पुनः सामान्यतः दृष्टाद
नुमानात् अतीन्द्रियाणाम् प्रधानपुरुषादी
नाम्प्रतीतिर्बुद्धेरध्यवसायो यथार्थ ज्ञानं भ
वति तस्मादपि च असिद्धम्परोक्षमाप्ताग
मात्सिद्धं भवति ॥ ६ ॥

टीका

जिस प्रमाण ते जो वस्तु सिद्ध होता है सो क
हते हैं सामान्य वस्तु घटपटादिक का ज्ञान

प्रत्यक्ष इंद्रियते होताहै अतींद्रियवस्तु प्रकृतिपुरुषादिकका ज्ञान सामान्यतोदृष्ट अनुमानते होताहै और ताहूते अगम्य परोक्षवस्तुका ज्ञान आप्त आगम श्रुति स्मृति आदिकसे होताहै ॥ ६ ॥

मूलम्

अतिदूरात्सामीप्यादिन्द्रियघा
तान्मनोऽनवस्थानात् ॥ सौक्ष्म्या
द्व्यवधानादभिभवात्समानाभि
हाराच्च ॥ ७ ॥

अन्वयः

सतोपिवस्तुन उपलब्धिरष्टभ्यो हेतुभ्यो न भवति अतिदूरात् चपुनः सामीप्यात् इन्द्रियघातात् मनोनवस्थानात् सौक्ष्म्यात् व्यवधानात् अभिभवात् समानाभिहारात् ॥ ७ ॥

टीका

विद्यमान वस्तुकीभी प्रतीति अष्टप्रकारते नहींहोतीहै अत्यंत दूरते जैसे आकाशके पक्षी अत्यंत समीपते जैसे नेत्रके अंजन अंधबधिर होयतें औरमनकी चंचलताते जैसे कामीपुरुषोंको समीपका

वस्तुनहींदेखपडताहै सूक्ष्मताते जैसे परमाणु आदिक औरव्यवधानते जैसेघरके भीतरके वस्तु और अभिभवते जैसे दिनमें सूर्यकेतेजसे ग्रहनक्षत्रादिक और समानाभिहारते जैसेमेघकाजल नदीकेजलमें मिलेते चकारते अनुद्भववस्तुकीभीप्रतीति नहींहोतीहै जैसेदुग्धावस्थामेंदधि॥

मूलम्

सौक्ष्म्यात्तदनुपलब्धिर्नाभावात्कार्यतस्तदुपलब्धेः॥ महदादितच्चकार्यम्प्रकृतिसरूपंविरूपंच ॥८॥

तदनुपलब्धिः प्रधानानुपलब्धिः सौक्ष्म्याद्भवति नअभावात् कुतः कार्यतस्तदुपलब्धेः किंतत्कार्यम् महदादिचतत्कार्यंभवति कथंभूतं प्रकृतिसरूपम् चपुनः विरूपम्॥८॥ टीका

प्रधानकेअनुपलब्धिकेहेतुकहतेहैं प्रधानके अनुपलब्धि अप्रतीति सूक्ष्मताते होतीहै गगनकेकुसुम औरकूर्मकेरो

म और शशके शृंगके सदृश अभावते अनुप
लब्धि नहीं होतीहै काहेते कार्य द्वारा प्रकृति के
उपलब्धि होनेते कौन प्रकृतिकाकार्य है मह
दादिक तिसके कार्यहैं कैसेहैं कारण अव
स्थामें प्रकृतिके समान रूपहैं जैसे मृत्तिका
में घट सुवर्णमें कुंडल और कार्यावस्थामें वि
विध प्रकार हैं प्रकृतिको जगतके कारण क
हते असत्ते सत होताहै यह बौद्धकामत औ
र एक सत निष्प्रपंच, विवर्त वस्तु होताहै यह
शंकराचार्यकामत और सत परमाण्वादिक
ते असत्कार्य होताहै यह कणादगौतमकाम
तते सबको निरास करके सतते सत होताहै
कारण और कार्य दूनो सत हैं यह साङ्ख्य शा
स्त्रके आचार्यकामत दृढकिया ॥८॥

असत्सत्पंचिभ्रमात

मूलम्

असदकरणादुपादानग्रहणात्स
र्वसंभवाभावात् ॥ शक्तस्य शक्य
करणात्कारणभावाच्च सत्कार्य
म् ॥९॥ अन्वयः

कारणव्यापारात्प्रागपि कार्यं सद्भवति कस्मा
त् असदकरणात् च पुनः उपादानग्रहणात्

सर्वसम्भवाभावात् शक्तस्य शक्यकरणात् कार
णभावात् ॥९॥

टीका

प्रथम कार्यको सत् जनावतेहैं उत्पत्तिते प
हिलेभी कार्य सतहै काहेते असत्तवस्तुके न
हीकरते जैसे नीलवर्णको कोई पीतवर्णन
हीं करसकताहै और तैलको तिलमे सत जा
नकरके तैलके निमित्त तिलके ग्रहणकरेते
और सर्ववस्तुतें सर्ववस्तुको नहिंउत्पन्नहोने
ते और तैलउत्पत्तिकरणरूप शक्तियुक्त श
क्ततिलको शक्यरूपतैलहीके उत्पन्नकरेते
और कार्यको कारण रूपहोनेते कारणते
कार्यको अभेदते जैसे मृत सुवर्णादिकते
घट कुंडलादिक अभेदहैं मृतसुवर्णादिक
रूपहैं ॥९॥

मूलम्

हेतुमदनित्यमव्यापिसक्रिय
मनेकमाश्रितं लिङ्गम ॥सावय
वंपरतन्त्रंव्यक्तंतद्विपरीतम
व्यक्तम ॥१०॥

अन्वयः

व्यक्तंभवति कथंभूतम हेतुमत अनित्यम अव्यापि सक्रियम् अनेकम आश्रितम लिङ्गम् सावयवम् परतन्त्रम् अव्यक्तंतु तद्विपरीतम् भवति ॥१०॥

टीका

कारणके सत्ताकेनिमित्त कार्यकोसत कहकर अबकार्य कारणकाभेद जनावतेहैं व्यक्तनाम महदादिकतत्वहैं कैसेहैं कारणजिनकोविद्यमानहैं और विनाशी तिरोभावीहैं और सर्वतत्वके प्रति अव्यापकहैं और क्रियाकरके युक्तहैं एकदेहको छोडकर दूसरे देहमे जातेहैं और पुरुष पुरुष प्रति बुध्यादिकको पृथक् पृथक् होनेते अनेकहैं और प्रकृतिके आश्रितहैं जैसे वनके आश्रित वृक्षहैं और प्रधानके जनावनेको लिंगहैं और अवयव अवयवी नाम संयोग संयोगी अप्राप्ति पूर्वक जो प्राप्ति सो संयोग ताकरके सहित सावयव कहाता है जैसे महदादिककार्य परस्पर संयोगहैं और परतंत्रहैं जैसे गंगाके पूरको नहरको अपेक्षाहै तैसे बुध्यादिकको अपने कार्यमें प्रकृतिके पूर

का अपेक्षा है और अव्यक्त जो मूलप्रकृति सो महदादिकतत्वते विपरीत है नाम अहेतुमत और नित्य और व्यापि और अक्रिय और एक और आश्रय और लिंगि और निरवयव और स्वतंत्र है ॥१०॥

मूलम्

त्रिगुणमविवेकि विषयः सामा
न्यमचेतनं प्रसवधर्मि ॥ व्यक्तं
तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा
च पुमान् ॥११॥

अन्वयः

यथाव्यक्तं भवति तथा प्रधानं भवति कथंभूतमुभयं त्रिगुणम् अविवेकि विषयः सामान्यम् अचेतनम् प्रसवधर्मि पुमान् तथा च भवति तद्विपरीतोऽपि भवति ॥११॥

टीका

व्यक्त अव्यक्त के साधर्मता और पुरुष के विधर्मता कहते हैं जैसा व्यक्त है तैसा अव्यक्त है दोनो कैसे हैं त्रिगुणात्मक हैं अविवेकी हैं नाम जैसे प्रकृति स्वतः न बिलग हो य सकती है तैसे बुद्ध्यादिक प्रकृति से

नहिंबिलगहोयसकतेहैं औरविषयहैं जा
ननेदेखनेसुननेकेयोग्यहैं औरसामान्यहैं
सर्वपुरुषकोसाधारणग्रहणहोतेहैं और
जडहैं औरप्रसवधर्मिनाम सरूपविरू
पसदाहोतेरहतेहैं औरपुरुष तथानाम
प्रधानमहदादिकके सदृशभीहै औरतेह
सबसेविपरीतभीहै अहेतुमत और
नित्यत्वादिगुणकरके प्रधानकेसदृशहै
और अनेकत्वादिकगुणकरके महदादि
केसदृशहै औरतीनोगुणतेरहितहोनेसे
व्यक्तअव्यक्तदोनोतेविपरीतहै ॥ ११ ॥

मूलम् काः

प्रीत्यप्रीतिविषादात्मप्रकाश
प्रवृत्तिनियमार्थाः॥ अन्योन्याभि
भवाश्रयजननमिथुनवृत्तय
श्चगुणाः ॥ १२

अन्वयः

सत्वरजस्तमोरूपाः त्रयोगुणाभवन्ति
कथंभूताः प्रीत्यप्रीतिविषादात्मकाः प्रका
शप्रवृत्तिनियमार्थाः च पुनः अन्योन्याभिभ
वाश्रयजननमिथुनवृत्तयः ॥ १२ ॥

टीका

गुणका लक्षण कहते हैं सत्व रज तमरूप तीनगुण हैं कैसे हैं क्रमकरके सुखदुःखमोहरूप हैं और प्रकाशप्रवृत्तिनियमकरके अर्थ हैं और परस्पर अभिभवकरना जैसे एकहि पुरुषको गुणोंके उद्भव अभिभव होनेते कोई समयमें ज्ञान और कोई कालमें विषयभोगमें चंचलता और कोई कालमें मोह होताहै और जैसे एकस्त्रीरूपगुणशीलवती अपने पतिको सुख और सपत्नीको ईर्ष्या और कामीको मोह उत्पन्नकरती है और आश्रयकरना और जनननाम परिणामकरना और मिथुनवृत्तिनाम अविनाभाववृत्तिरूप परस्पर मिलकेरहना यह सब तीनो गुणके स्वभाव हैं ॥१२॥

मूलम्

सत्वंलघुप्रकाशकमिष्टमुपष्टंभकंचलंचरजः॥गुरुवरणकमेवतमःप्रदीपवच्चार्थतोवृत्तिः ॥१३॥

अन्वयः

सत्वमेवलघुप्रकाशकंचसांङ्ख्याचार्यैरि

ष्टम् रज एव उपष्टंभकं चलं च इष्टम् तम एव गु
रुवर्णकं च इष्टम् च पुनः अर्थतः पुरुषार्थतः
पुरुषार्थार्थं परस्परविरोधिनामपि त्रया
णां गुणानां वृत्तिर्भवति॥ १३

केवलसत्वगुणका लघु और प्रकाशरूप सा
ख्यके आचार्य कहते हैं और रजोगुणको उ
पष्टंभक और चलरूप कहते हैं उपष्टंभ कना
प्रवर्ति बढावने को जैसे सांड और भारीका
ष्ट चलावने को जैसे दंडा और केदारमे जल
ले जाने के वास्ते मृत्तिका खोदने को जैसे खु
रपि कुदार को उपष्टंभक कहते हैं और तमो
गुणको गुरु नाम भारी और आवर्ण रूप क
हते हैं और पुरुषार्थ के निमित्त जैसे वत्ति
तैल अग्नि परस्पर विरोधी भी हैं मिलकर प्रदी
पका काम करते हैं पुनः जैसे कफ वात पित्त
परस्पर विरोधी भी हैं मिलकर शरीर धारण
करते हैं तैसे तीनो गुण परस्पर विरोधी भी
हैं तथापि पुरुषार्थ के निमित्त मिलकर
तीनो गुणकी वृत्ति होती है ॥ १३ ॥

मूलम्

अविवेक्यादेः सिद्धिस्त्रैगुण्या
त्तद्विपर्ययाभावात्॥ कारण
गुणात्मकत्वात्कार्यस्याव्यक्त
मपि सिद्धम् ॥१४॥

अन्वयः

अविवेकित्वादेः सिद्धिर्भवति कस्मात् त्रै
गुण्यात् तद्विपर्यये अविवेक्यादिविपर्य
ये पुरुषे त्रैगुण्याभावात् अव्यक्तसिद्धिवि
ना कुतः तद्धर्मस्याविवेक्यादेः सिद्धिः अ
व्यक्तमपि सिद्धं भवति कस्मात् कार्यस्य
कारणगुणात्मकत्वात् ॥१४॥

टीका

अविवेकित्वादिकधर्मकी सिद्धि होती है का
हेते जो जो सुखदुःखमोहरूप त्रिगुणात्मक
वस्तु हैं सो सब जडरूप हैं जडते विपर्यय पु
रुषमें तीनो गुणके अभावते अव्यक्तके सि
द्धिविना कैसे अव्यक्तके धर्म अविवेकित्वा
दिककी सिद्धि होती है अव्यक्तकी भी सि
द्धि होती है काहेते कार्यको कारणके गुण
के अनुरूप होयबेते जैसे रक्तसूत्रका रक्तव
र्ण नीलसूत्रका नीलवर्ण पट होते हैं तैसे

कार्यरूपमहदादिकको सुखदुःखमोहरूप होयेते कारणभी सुखदुःखमोहरूप जाना जाताहै ॥१४॥

मूलम्

भेदानांपरिमाणात्समन्वयाच्छ
क्तितःप्रवृत्तेश्च॥ कारणकार्य
म विभागादविभागाद्वैश्वरूप्यस्य॥१५॥

अन्वयः

भेदानाम् महदादीनाम् मूलकारण मव्यक्त
मस्ति इतिद्वितीयेनान्वयः॥कुतः
भेदानाम् महदादीनाम् परिमाणात् अ-
व्यापित्वात् पुनःकुतः समन्वयात् भिन्ना
नां सरूपता समन्वयः तस्मात् चपुनःका
रण शक्तितः कार्यप्रवृत्तेः कारणकार्यवि
भागात् वैश्वरूपस्य अविभागात् ॥१५॥

टीका

पुरुषपुरुषप्रति वर्तमान भिन्न भिन्न मह दादिक तत्वका मूलकारण अव्यक्तहै यह दूसरे श्लोकमें अन्वयहै काहेते पृथक् पृथक् महदादिक तत्वके परिमाणते नामअ पूर्णता अव्यापकताते औरप्रकृतिते भिन्न

बुध्यादिकतत्वके प्रकृतिके समान जो रूप त्रिगुणात्मकभाव सोइ जो प्रकृतिके कार्य में समन्वय,नाते और कारणके शक्तिते कार्यके प्रवृत्ति होयेते कारणसे कार्यको विभागते और संपूर्णनानारूपकार्यको प्रकृतिसे अविभागते जैसे मृतसुवर्णादिकते घट कुंडलादिक नाम रूप करके पृथक् भी हैं और मृतसुवर्णादिकतत्वते पृथक् नही हैं ॥१५॥

मूलम्

कारणमस्त्यव्यक्तं प्रवर्तते त्रिगुणतः समुदयाच्च ॥ परिणामतः सलिलवत्प्रति प्रति गुणाश्रय विशेषात् ॥ १६ ॥

अन्वयः

अव्यक्तं कारणमस्ति यतः प्रतिसर्गावस्थायामपि त्रिगुणतः प्रवर्तते सृष्ट्यादौ समुदयात् गुणप्रधानभावेन समेत्य उदयः समुदयः तस्मात् कथम् परिणामतः सलिलवत्प्रवर्तते कुतः प्रति प्रति गुणाश्रयविशेषात् ॥ १६ ॥

टीका

प्रकृतिकी स्वरूप सिद्ध करके अब प्रकृति

केप्रवृत्तिकाप्रकारकहतेहैं अव्यक्तकारण है सृष्टिआदिककालमेंन्यून अधिकभाव करके,गुणोंका मिलके जोउदय,तिसको कहियेसमुदय तातेःमहदादिकतत्त्वअने करूपहोयकेवर्त्ततेहैं कौनप्रकारते जैसे एकही मेघकाजल आम्र अम्ली इक्षु तार और मिरच आदिक फलपर गिरके अनेकप्रकार रसहोताहै काहेते एकए क गुणके आश्रय करके जो विशेष न्यू न अधिक भाव ताते ॥१६॥

मूलम्

संघातपरार्थत्वात्त्रिगुणादिवि
पर्ययादधिष्ठानात् ॥ पुरुषोऽस्ति
भोक्तृभावात्कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च
॥१७॥ अन्वयः

अव्यक्तादेर्व्यतिरिक्तःपुरुषोऽस्ति कुतः सङ्घातपरार्थत्वात् च पुनः त्रिगुणादिविपर्ययात् अधिष्ठानात् भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेः ॥१७॥

टीका

देहादिको आत्मा मानने वाले पुरुषको कह

तेहैं कि अव्यक्त आदिकते भिन्न आत्मा है का हेते अव्यक्त महद अहंकारादिक संघातको देह गेहके नाईं पराये के अर्थ होयते आत्मा को त्रिगुणादिकते विपर्यय होयते देह गेह को अधिष्ठाता रूप आत्माके अधिष्ठान होयते पुनः आत्मा को सुख दुःख मोहके भोक्ता होयते और आत्माके कैवल्यके अर्थ सुख दुःख मोहों वियोगके अर्थ श्रुति स्मृति महर्षिन को प्रवृत्त होयेते ॥१७॥

मूलम्

जननमरणकरणानांप्रतिनि
यमादयुगपत्प्रवृत्तेश्च ॥ पुरुष
बहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्य विपर्यया
च्चैव ॥१८॥

अन्वयः

पुरुषबहुत्वं सिद्धं भवत्ति कुतः जनन मरण करणानां प्रतिनियमात् च पुनः अयुगपत्प्रवृत्तेः च पुनः त्रैगुण्य विपर्ययादेव ॥१८॥

टीका

पुरुष बहुत हैं सो सिद्ध होते हैं काहेते देहादिकका संयोगरूप जन्म पुनः देहादिकका वि

योगरूपमरण और क्षुधादिक इंद्रियको पुरुष पुरुष प्रति पृथक् पृथक् के नियमते और खाने पीने चलने फिरने सोने जागने मे पृथक् पृथक् कालमें प्रवृत्त होयेते पुनः तीनो गुणके पर्यायते देव मनुष्य पशु आदिक तीन प्रकार पृथक् पृथक् योनि धारण करनेते एव नाम निश्चय करके ॥१८॥

मूलम्

तस्माच्च विपर्यासात्सिद्धं साक्षि
त्वमस्य पुरुषस्य॥ कैवल्यमा-
ध्यस्थ्यं द्रष्टृत्वम कर्त्तृभावश्च॥१९॥

अन्वयः

च पुनः तस्मात् त्रिगुणमविवेकिविषयः इत्येतस्मात् प्रकृतिलक्षणात् विपर्यासात् अस्य पुरुषस्य साक्षित्वम् कैवल्यम् माध्यस्थ्यम् द्रष्टृत्वम् चपुनः अकर्त्तृभावः सिद्धं भवति॥१९॥

टीका

त्रिगुण अविवेकि विषय यह जो प्रकृति का लक्षण ताते विपर्यय होयेते यह पुरुष को अत्रिगुणत्व विवेकित्व अविषयत्व

चेतनत्वादिकसिद्धभया चेतनत्वादिकसिद्ध होयेते साक्षित्व औरद्रष्टृत्वसिद्धभया अत्रै गुण्य होयेते कैवल्य माध्यस्थसिद्धभया और अविवेकित्व अप्रसवधर्मित्वहोयेते अकर्त्तृत्वसिद्धभया ॥१९॥

मूलम्

तस्मात्तत्संयोगादचेतनंचेतन
वदिवलिङ्गम्॥गुणकर्त्तृत्वेच
तथाकर्त्तेवभवत्युदासीनः॥२०॥

अन्वयः

यस्मात् प्रकृतिचैतन्ययोः समानाधिकरण्यम् अस्मिन्मतेनावकल्पते चेतनस्याकर्त्तृत्वात् कर्तुश्चाचेतनत्वात् यस्माच्च चैतन्यकर्त्तृत्वे भिन्नाधिकरणेयुक्तितःसिद्धे तस्मात् तत्प्रकृतिपुरुषयोःसंयोगात् अचेतनंलिङ्गंमहदादिसूक्ष्मपर्यंतम् चेतनवदिवभवति तथाचउदासीनः त्रिगुणकर्त्तृत्वे कर्त्ताइवभवति॥२०॥

टीका

जातेकर्त्तृत्वचेतनत्वकोसमानता यहसांख्यमतमें नहीकल्पनाहोताहै चेतनको-

अकर्ताहोयेते कर्ताको अचेतन होयेते जा
ते चेतनत्व और कर्तृत्व इनदोनो के आधार
पृथक् युक्तिते सिद्धहैं ताते प्रकृति पुरुष
के संयोगते जैसे अचेतन लिंगशरीर उन
बीस १९ तत्त्वका चेतन के नाई है तैसे गुण
के कर्तृत्व में उदासीन जो आत्मा सोक-
र्ताकेसदृशहै ॥ २० ॥

मूलम्

पुरुषस्य दर्शनार्थं कैवल्यार्थं त
थाप्रधानस्य ॥ पङ्ग्वन्धवदुभ
योरपिसंयोगस्तत्कृतः सर्गः ॥ २१ ॥

अन्वयः

पङ्ग्वन्धवदुभयोः प्रकृतिपुरुषयोः संयोगो-
भवति किमर्थम् प्रधानस्य दर्शनार्थम् -
तथापुरुषस्य कैवल्यार्थम् तत्कृतः संयो-
गकृतः सर्गोभवति ॥ २१ ॥

टीका

कहूं जानेके निमित्त पंगु अंधाका जैसे सं
योग होताहै तैसे प्रकृतिपुरुषका संयोग
है काहेके निमित्त प्रकृतिको अपना स्व
रूप पुरुषके आगे देखावनेकाम याजनहै

और पुरुषको कैवल्यके अर्थ प्रकृतिके सं
गका प्रयोजन है काहेकि प्रकृतिके संग
विज्ञाज्ञान नहीं होसकता है और संयोग
का कीया सर्ग है काहेते महदादिक सर्ग
विना ज्ञानकी उत्पत्ति नहीं होसकती है ॥२१॥

मूलम्

प्रकृतेर्महांस्ततोऽहङ्कारस्त-
स्माद्गणश्च षोडशकः॥ तस्मा-
दपि षोडशकात्पञ्चभ्यः पञ्च
भूतानि ॥२२॥

अन्वयः

प्रकृतेर्महान्भवति ततो महतोऽहङ्कारो
भवति तस्मात् अहङ्कारात् पञ्च ज्ञानेन्द्रि
याणि पञ्च कर्मेन्द्रियाणि एकं मनः पञ्चत
न्मात्रा इति षोडशको गणो भवति तस्माद
पि षोडशकादपकृष्टेभ्यः पञ्चभ्यः तन्मा
त्रेभ्यः पञ्चभूतानि आकाशादीनि भवन्ति
॥२२॥

टीका

प्रकृतिसे महत्तत्त्व होता है महत्तत्त्वसे -
अहंकार अहंकारते पंचज्ञानेंद्रिय पंचक
र्मेंद्रिय एकमन पंचतन्मात्रा, ये सब षोडश

गणहोतेहैं और षोडशगणसेभी पश्चात
के तन्मात्राते आकाशादिक पंचमहाभूत
होतेहैं शब्दतन्मात्रासे आकाशहोताहै जिस
में शब्दगुणहै और शब्दतन्मात्रासहित -
स्पर्शतन्मात्रासे वायुहोताहै जिसमें शब्द
स्पर्श दोगुणहैं पुनः शब्द स्पर्श तन्मात्रास
हित रूपतन्मात्रासे तेजहोताहै जिसमें
शब्द स्पर्श रूप तीनगुणहैं और शब्द स्प
र्श रूप तन्मात्रासहित रसतन्मात्रासे जल
जिसमें शब्द स्पर्श रूप रस चारगुणहैं फिर
शब्दस्पर्शरूपरसतन्मात्रासहित गन्धत-
न्मात्रासे पृथिवी जिसमें शब्दस्पर्शरूप
रस गंध पांचगुणहैं ॥२२॥

मूलम्

अध्यवसायोबुद्धिर्धर्मोज्ञानं
विरागऐश्वर्यम्॥सात्त्विकमे
तद्रूपंतामसमस्माद्विपर्यस्त
म्॥२३॥

अन्वयः

अध्यवसायोबुद्धिर्भवति तस्याःसात्त्विक
नामभेदेन अष्टौधर्माभवन्ति तत्र ध

र्मोज्ञानंविराग ऐश्वर्यमिति एतच्चतुष्टयंसा त्विकंरूपंभवति अस्माच्चतुष्टयाद्विपर्यस्तं विपर्ययरूपम् अधर्मोऽज्ञानमविराग अ नैश्वर्य इति चतुष्टयंतामसंभवति ॥२३॥

टीका

व्यक्तोंमें ज्ञानकासाधन प्रथम बुद्धिकास्व रूपकहतेहैं और क्रियाकरनेवालेको अभे ददृष्टिकरके कहतेहैं निश्चयनाम शुभाशुभ को निश्चयकरनेवाली बुद्धिकास्वरूपहै बु द्धिके सात्विक तामस भेदकरके आठधर्म हैं तिसमें धर्म ज्ञान विराग और ऐश्वर्य य ह चारों सात्विकहैं पुनः यह चारोंते विपर्य य धर्म अज्ञान अविराग और अनैश्वर्य यै चारों तामसहैं और अधिभूत रूपकरकेजो महत्तत्वहै सोई अध्यात्मकरके बुद्धिनाम है॥२३॥ क्रिया

मूलम्

अभिमानोऽहंकारस्तस्माद्वि-
विधः प्रवर्त्ततेसर्गः॥ एकादश
कश्चगणस्तन्मात्रःपंचकश्चैव॥२४॥

अन्वयः

अभिमानोऽहंकारोभवति तस्मादहंकारात्

द्विधा सर्गः प्रवर्त्तते एकादशको गण इंद्रियाणाम् च पुनः पंचको गणः तन्मात्रः॥२४॥

टीका

देह गेह में ममत्व करना और अपने को देह गेह का स्वामी मानना अहंकार कहाता है अहंकार ते द्विप्रकार सृष्टि होती है पंचज्ञानेंद्रिय, एक मन ये एकादश इंद्रियों के गण एकप्रकार, पंचतन्मात्रा का गण एकप्रकार॥२४॥

मूलम्

सात्विक एकादशकः प्रवर्तते वै
कृतादहंकारात्॥भूतादेस्तन्मा
त्रःसतामसस्तैजसादुभयम्॥२५॥

अन्वयः

सात्विकः एकादशकः इंद्रियगणः वैकृतादहङ्कारात्प्रवर्त्तते यस्तामसस्तन्मात्रस्सभूतादेरहङ्कारात्प्रवर्त्तते तैजसात्तैजस सहायात् उभयं प्रवर्त्तते॥२५॥

टीका

सात्विकरूप एकादश इंद्रियों के गण वैकारिक नाम सात्विक अहंकार ते उत्पन्न होते हैं और जो तामसरूप पंचतन्मात्रा के गण सो भू

नादिनाम तामस अहंकारते उत्पन्न होते हैं. पुनः तैजस नाम राजस अहंकार के सहाय ते इंद्रिय और तन्मात्रा दोनो गण उत्पन्न होते हैं ॥२५॥

मूलम्

बुद्धीन्द्रियाणि चक्षुः श्रोत्र घ्राण
रसन त्वगाख्यानि ॥ वाक्पाणि·
पाद पायूपस्थानि कर्मेन्द्रियाण्या
हुः ॥२६॥ अन्वयः

चक्षुः श्रोत्र घ्राण रसन त्वगाख्यानि बुद्धीन्द्रियाणि आहुः सांख्याचार्याः वाक् पाणि पाद पायु उपस्थानि इति कर्मेन्द्रियाण्याहुः ॥२६॥

टीका

सांख्य के आचार्य चक्षुः श्रोत्र घ्राण रसन· त्वक् इन पाँचोंको ज्ञान इंद्रिय कहते हैं और वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ इन पाँचों को कर्मेंद्रिय कहते हैं ॥२६॥

मूलम्

उभयात्मकमत्र मनःसंकल्पक·
मिन्द्रियञ्च साधर्म्यात् ॥ गुणपरि
णाम विशेषान्नानात्वं बाह्यभे
दाश्च ॥२७॥

अन्वयः

अत्रैकादशसु इन्द्रियेषु मनः उभयात्मकम् बुद्धीन्द्रियं कर्मेन्द्रियं च भवति बुद्धीन्द्रियाणाम् चक्षुरादीनां वागादीनां कर्मेन्द्रियाणां च मनोधिष्ठितानां स्वस्वविषयेषु प्रवृत्तेः च पुनः संकल्पकं इन्द्रियम् कुतः साधर्म्यात् एक-स्मात्सात्त्विकाहंकारात् कथमेकादशेंद्रियाणि गुणपरिणामविशेषात् नानात्वंभवंति च पुनः बाह्यभेदाः पृथिव्यादयः एकस्मात् तामसाहंकारात् नानात्वंभवंति ॥२७॥

टीका

इन एकादशेंद्रियोंमें मन, ज्ञानेंद्रिय और-कर्मेंद्रिय दोनोप्रकारहै चक्षुरादिकज्ञानेंद्रियोंको और वागादिक कर्मेंद्रियोंको मन कर के युक्त होनेसे अपने अपने विषयमें प्रवृ-त्तिते और संकल्पकनाम शुभाशुभ विचार कर्ता और इंद्रियहै काहेते चक्षुरादिकइंद्रियोंके साथ सात्विक अहंकारसे उत्पन्नहोयेते एकसात्विकअहंकारसे कैसे एकादश इंद्रियें होतेहैं गुणोंके परिणाम भेदते नाना प्रकार होतेहैं जैसाही पृथिव्यादिक पंच

महाभूतभी एकतामस अहंकारसे नाना प्रकार होते हैं ॥२७॥

मूलम्

शब्दादिषु पंचानामालोचनमात्रमिष्यते वृत्तिः॥ वचनादानविहरणोत्सर्गानंदाश्च पंचानाम्॥२८॥

अन्वयः

शब्दादिषु शब्दस्पर्शरूपरसगन्धेषु पंचविषयेषु पंचानां श्रोत्र त्वक् चक्षु जिह्वा घ्राण इति ज्ञानेन्द्रियाणाम् आलोचनमात्रं सम्मुग्धं वस्तुमात्रदर्शनम् वृत्तिरिष्यते च पुनः पंचानां कर्मेन्द्रियाणाम् वाक् पाणि पादपायूपस्थानां वचनादानविहरणोत्सर्गानंदाः वृत्तय इष्यंते॥२८॥

टीका

शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध पांच विषयोंमें श्रोत्र त्वक् चक्षु जिह्वा घ्राण ये पंच ज्ञान इन्द्रियोंको बालकके सदृश वस्तुमात्र को देखना वृत्ति है और पंच कर्मेन्द्रिय वाक् पाणि पाद पायु उपस्थका बोलना लेनदेन-करना चलना मलादिक त्याग करना और-स्त्रीभोगके सुखको जानना यह सब पंचवृत्ति

हैं ॥२८॥ मूलम्

स्वालक्षण्यं वृत्तिस्त्रयस्यसैषा
भवत्यसामान्या॥सामान्यकर
णवृत्तिः प्राणाद्यावायवःपंच॥२९॥

अन्वयः

स्वम् असाधारणं लक्षणं येषांतानि तेषाम्
भावः स्वालक्षण्यं त्रयस्य महदादेर्वृत्तिर्व्या·
पारः स्वालक्षण्यं भवति सा एषा वृत्तिरसा
मान्याभवति प्राणाद्यावायवः पञ्च सामा·
न्यकरणवृत्तिः भवंति सामान्याचासौ क·
रणवृत्तिश्चेति ॥२९॥

टीका

तीन महदादिकतत्वकी वृत्ति स्वालक्षण्य है
जैसे महत्तत्वका यथार्थ वस्तुको निश्चयकर
ना अहंकारका अभिमान और मनका सं·
कल्प रूपवृत्ति है सो यह वृत्ति असाधारण
नाम दूसरे में नहीं है और प्राणादिक पांच
न वायु तीनों इंद्रियों के जीवरूप वृत्ति हैं ति·
समें प्राण वायुकी वृत्ति नासिका के अग्रभा
ग, हृदय नाभि चरणों के अंगुष्ठों में हैं अपा
न वायुकी वृत्ति कमर में पृष्ठगुदा उपस्थ

पार्श्वमें है समानवायुकी वृत्ति हृदय नाभि सर्वसंधिमें है उदानवायुकी वृत्ति हृदय कंठ तालु मूर्धा भ्रूकेमध्यमें है और व्यानवायुकी वृत्तित्वचामेंहै॥ २९ ॥

मूलम्

युगपच्चतुष्टयस्यवृत्तिःक्रम·
शश्चतस्यनिर्दिष्टा॥दृष्टेतथा
प्यदृष्टेत्रयस्यतत्पूर्विकावृत्तिः
॥ ३०॥ अन्वयः

यथा दृष्टेऽर्थेचतुष्टयस्य चतुर्विधकरण· स्य वृत्तिः युगपन्निर्दिष्टा साङ्ख्याचार्यैः च पुनः तस्य चतुर्विधकरणस्य वृत्तिः क्रमशः निर्दिष्टा तथा अदृष्टेत्रयस्य अंतः ऽपि करणस्य युगपत् क्रमेणवा वृत्तिः तत्पूर्विका दृष्टपूर्विकाभवति अनुमानागमस्मृतयो हि परोक्षार्थे दर्शनपूर्वाः प्रवर्तते ना· न्यथा ॥ ३०॥ टीका

सांख्यके आचार्य सब जैसे दृष्टवस्तुमें कोई क एंबाह्यइंद्रियसहित तीनों अंतःकरणकी वृत्ति एककालमेंकहतेहैं पुनः तिन सब· चारो इंद्रियोंकीवृत्ति क्रमकरकेभीकहते

हैं तैसेही अदृष्ट वस्तुमेंभी तीनौ अंतःक रणकीवृत्ति एककालमें अथवा क्रमक रके दृष्टपूर्वकहोतीहै काहेते अनुमान आगम स्मृति सब परोक्ष अर्थमेंभी ज्ञा नपूर्वकहि होतेहैं अन्यप्रकारन हिंहोते हैं ॥३०॥

मूलम्

स्वांस्वां प्रतिपद्यंते परस्परा कृतहेतुकांवृत्तिम ॥ पुरुषार्थ एवहेतुर्नकेनचित्कार्यतेक रणम् ॥३१॥

अन्वयः

करणानि स्वांस्वां वृत्तिं प्रति पद्यन्ते कथं भूताम् परस्पराकूतहेतुकाम् तत्र स्ववृ त्तिप्रतिपद्दने पुरुषार्थ एव हेतुःकरणंके नचित्कार्यते ॥३१॥

टीका

करणनाम इन्द्रिय सब अपने अपने वृ त्तिको प्राप्तहोतेहैं कैसी वृत्तिहै परस्प रइंद्रियोंकी अभिप्रायही जिसमें कार णहै जैसे अनेकप्रकारके अस्त्रलेकेअ नेक योद्धा रणमें जातेहैं युद्धकालमें पर

स्यर एकको देखकर एक अपनी अस्त्रले
के युद्ध करता है तैसे पुरुषके भोग और अ
पवर्गके अर्थ इंद्रिय सब अपने अपने विष
यमें वर्तते हैं और अपने अपने पुरुषका
अर्थ जो भुक्ति मुक्ति सोई कारण है इंद्रियों
का प्रेरक दूसरा कोई नहीं है ॥३१॥

मूलम्

करणंत्रयोदशविधंतदाहरण
धारणप्रकाशकरम् ॥ कार्यंचत
स्यदशधाहार्यं धार्यं प्रकाश्यं
च ॥३२॥

अन्वयः

कारकविशेषः करणम् त्रयोदशविधंभ
वति तच्च करणं आहरण धारण प्रकाश
करंभवति तस्यच कार्यं दशधाभवति
कथंभूतं हार्यं धार्यं प्रकाश्यंच ॥३२॥

टीका

बुद्धि अहंकार मन पांच ज्ञानेंद्रिय पांच
कर्मेंद्रिय ये करण तेरह १३ प्रकारहैं सो
करण आहरण धारण प्रकासके करता
हैं करणके कार्यभी दश प्रकारहैं कैसेहैं

आहरण धारण और प्रकाशके योग्यहैं तिसमें वागादिक कर्म इंद्रियोंका विषयदि व्यादिव्यभेदकरके दश प्रकार आहार्यहैं बुद्धि अहंकार मन ये तीनो इंद्रियों अपने वृत्तिकरके प्राणादिकद्वारा पंचभौतिक शरीर और शब्दादिकविषय दिव्य अदि व्य भेदकरके दश १० प्रकार धार्यहैं और बु द्धींद्रियको शब्दादिक विषय दिव्यादिव्य भेदकरके दश १० प्रकार प्रकाश्यहैं ॥३२॥

मूलम्

अंतःकरणं त्रिविधंदशधाबा ह्यंत्रयस्यविषयाख्यम॥सांप्र तकालंवाह्यं त्रिकालमाभ्यंत रंकरणम्॥३३॥

अन्वयः

बुद्धिरहंकारोमनइतिशरीराभ्यन्तरव र्तित्वादन्तःकरणंत्रिविधंभवति पञ्चज्ञाने न्द्रियम् पञ्चकर्मेन्द्रियमिति दशधाबाह्यमिं द्रियंभवति कथंभूतम् त्रयस्यान्तःकरण स्य विषयमाख्यातीति विषयाख्यम् सं कल्पाभिमानाध्यवसायेषु कर्तव्येषु द्वारी

भवन्ति बुद्धींद्रियाणि आलोचनेन कर्मेंद्रियाणिव्यापारेण पुनरपिद्वयो र्विशेषमाह सा म्प्रत कालं वर्तमानकालं वाह्यम् इन्द्रियम्भवति आभ्यन्तरं करणं त्रिकालंभवति ॥३३॥

टीका

बुद्धि अहंकार मन यह सब अंतःकरणतीन प्रकार हैं पाँचज्ञानेंद्रिय पाँचकर्मेंद्रिय ये दस१० बाह्यकरणहैं कैसेहैं तीनों अंतःकरणके विषयके ज नावनेवालेहैं संकल्प अभिमान अध्यवसाय विषे द्वारभूतहैं ज्ञानेंद्रिय देख सुनकरके कर्मेंद्रिय कर्तव्य करके और भी दोनो करण का भेद कहते हैं समीपभून भविष्य वर्तमान कालको बाह्यकरण जानतेहैं और तीन अंतःकरण तीनो कालको जानतेहैं ॥३३॥

मूलम्

बुद्धीन्द्रियाणि तेषां पञ्च विशेषा
विशेष विषयाणि ॥ वाग्भवति
शब्द विषया शेषाणितु पञ्च वि
षयाणि ॥३४॥

अन्वयः

तेषां दशानां बाह्येन्द्रियाणां पञ्च बुद्धीन्द्रिया- णि भवन्ति कथम्भूतानि विशेषाविशेषवि षयाणि विशेषाः स्थूलशब्दादयः अविशे षाः तन्मात्राणि सूक्ष्म शब्दादयः ते विष- याः येषां तानि कर्मेन्द्रियाणां मध्ये वाक्स्थू लविषयाभवति शेषाणि तु चत्वारि पायूप स्थ पाणि पादाख्यानि पञ्च विषयाणि भव- न्ति पाण्याद्याहार्याणां घटादीनां पञ्च शब्दा द्यात्मकत्वादिति ॥३४॥

•शब्द

टीका

इन दश १० बाह्य इंद्रियोंके मध्यमें पांचज्ञा नेंद्रियहैं कैसेहैं स्थूल शब्दादिक दोनोंको जानतेहैं तिसमें स्थूल शब्दादिककोहम सबके इंद्रियें जानतेहैं सूक्ष्म शब्दादिक- को योगियोंके दिव्यइंद्रियें जानतेहैं और कर्मेंद्रियकेमध्य वाक् स्थूल शब्दको जा- नतीहै और शेषजो चार इंद्रियें गुदाउप- स्थ पाणि पाद सो पांचो शब्दादिक विषयों को जानतेहैं करचरणादिकते ग्रहण क रने योग्य घटपटादिवस्तुको शब्दादिकपां च विषयरूपहोयेते ॥३४॥

और महत्तत्वकी

मूलम्

सान्तःकरणाबुद्धिःसर्वंविष
यमवगाहतेयस्मात्॥तस्मा
त्रिविधंकरणंद्वारिद्वाराणि
शेषाणि॥३५॥

अन्वयः

सान्तःकरणा मनोऽहङ्कारसहिताबुद्धिः य
स्मात् सर्वंविषयं अवगाहते अध्यवस्य
ति तस्मात् त्रिविधंकरणं द्वारिनामप्रधा
नंभवति शेषाणिदशबाह्येन्द्रियाणि द्वारा
णिनाम गौणानिभवन्ति ॥३५॥

टीका

मनअहंकारसहितबुद्धि जातेसर्ववि
षयकोनिश्चयकरतीहै ताते तीनों अंतः
करणप्रधानहैं और शेषजो दशबाह्यइंद्रि
यैंसोगौणहैं नाम तीनों अंतःकरणोंके
आधीनहैं ॥३५॥

मूलम्

एतेप्रदीपकल्पाःपरस्परविल
क्षणागुणविशेषाः॥कृत्स्नंपुरु
षस्यार्थंप्रकाश्यबुद्धौप्रयच्छन्ति॥३६॥

अन्वय

एते बाह्येन्द्रियमनोऽहङ्काराः पुरुषस्य कृत्स्नम् अर्थम् प्रकाश्य बुद्धौ प्रयच्छन्ति कथम्भूताः एते गुणविशेषाः परस्परविलक्षणाः प्रदीपकल्पाः ॥ ३६ ॥ टीका

तीन अंतःकरणों को प्रधान कहकर अब मन अहंकार ने भी बुद्धि को प्रधान कहते हैं जैसे एक एक ग्राम के तहसीलदार एक परगना के तहसीलदार को कर पहुंचाते हैं और परगना के तहसीलदार सब एक जिला के मालिक को पहुंचाते हैं और जिला के मालिक राजा को कर पहुंचाते हैं तैसे यह सब बाह्य इंद्रिय पुरुष के संपूर्ण अर्थ को देख सुनकर के मन को अर्पण करते हैं मन संकल्प करके अहंकार को अर्पण करता है अहंकार अभिमान करके बुद्धि को अर्पण करता है यह बाह्य इंद्रिय मन अहंकार कैसे हैं सत्व रज तम इन तीनों गुणों के विकार रूप हैं और परस्पर विरोधी भी हैं तथापि प्रदीपक सदृश हैं जैसे बत्ति तैल अग्नि परस्पर विरोधि भी हैं तथापि मिलके प्रदीपरूप होकर के अंधकार दूर करके प्रकाशक

रते हैं ॥३६॥ मूलम्

सर्वम्प्रत्युपभोगं यस्मात्पुरुषस्य
साधयति बुद्धिः॥सैव च विशिन
ष्टि पुनः प्रधानपुरुषान्तरं सूक्ष्मम्
॥३७॥ अन्वयः

कुतः बाह्येंद्रियादीनि बुद्धौ प्रयच्छन्ति यस्मात्
पुरुषस्य सर्वम्प्रत्युपभोगम् बुद्धिः साधयति
च पुनः सा एव बुद्धिः प्रधान पुरुषान्तरं सूक्ष्मं
विशिनष्टि ॥३७॥ टीका

काहेते बाह्येंद्रियादिक बुद्धिको अर्पण करते
हैं जाते पुरुषका संपूर्णविषय उपभोगकोबुद्धि
साधन करतीहै औरसोई बुद्धि प्रधानपुरुष
का सूक्ष्म जोभेद तिसको जनाय देतीहै तिका
रस हि प्रधान भिन्नहै औरपुरुषभिन्नहै अ त
विवेक करके एक होयरहाहै ॥३७॥

मूलम्

तन्मात्राण्यविशेषास्तेभ्योभूता
निपञ्चपञ्चभ्यः॥एते स्मृता विशे
षाःशान्ताघोराश्चमूढाश्च॥३८॥

अन्वयः

शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा इति तन्मात्राणि

क्ष्माणि अविशेषा भवन्ति तेभ्यः पञ्चभ्यः तन्मात्रेभ्यः आकाश वायु अग्नि जल पृथिवी रूपाणि पञ्चभूतानि क्रमेण भवन्ति एते विशेषाः स्मृताः कुतः यतः शान्ताः घोरा मूढाश्च ॥३८॥

टीका

बुद्धि आदिक करण वरणन करके अब विशेष अविशेष कहते हैं शब्द स्पर्श रूप रस गंध यह पंच तन्मात्र अविशेष हैं सूक्ष्मरूप हैं और तीन ही पंच तन्मात्र से आकाश वायु अग्नि जल पृथिवी रूप पंच महाभूत क्रमहीं ते होते हैं यहि विशेष नाम स्थूल कहावते हैं काहेते जाते सत्वगुण के अधिकता करके शांत सुख प्रकाश लघुरूप हैं रजोगुण के अधिकता करके घोर दुःख चंचलरूप हैं और तमोगुण के अधिकता करके मूढ विषं गुरुरूप हैं ताते ॥३८॥

मूलम्

सूक्ष्मा मातृपितृजाः सह प्रभूतै
स्त्रिधा विशेषाः स्युः॥ सूक्ष्मास्तेषा
न्नियता मातापितृजा निवर्त्तन्ते ॥३९॥

अन्वयः

विशेषास्त्रिधाः स्युः सह प्रभूतैः सूक्ष्मा मातृ

पितृजाइति तत्र सूक्ष्मा एकोनविंशति १९
तत्वरूपाः सूक्ष्मदेहाः इति एको विशेषः मातृ
पितृजाः षाट्कौशिकाः तत्र मातृतो लोम
लोहितमांसानि पितृतस्तु स्नायु अस्थि-
मज्जान इति द्वितीयो विशेषः महाभूतानि त
त्कार्यं घटादीनि च तृतीयो विशेषः तेषां त्र
याणां मध्ये सूक्ष्मा नियताभवन्ति मातृपि
तृजास्तु निवर्त्तन्ते रसान्तावा भस्मान्तावा वि
डन्तावा ॥ ३९ ॥ टीका

विशेष तीन प्रकार हैं महाभूत सहित सूक्ष्म
और माता पितासे जन्मा षाटकौशिक शरीर
हैं तिसमें सूक्ष्मशरीर प्रकृति सहित उनवी
स १९ तत्वकाहै माता पितासे जन्मा छव ६
कोशकाहै पुनः इनमें से मातासे जन्मा तीन ३
कोश लोम रुधिर मांस और पितासे जन्मा
तीं ३ स्नायु अस्थि मज्जा और तीसरा वि
शेष पंचमहाभूत और घटपटादिक ते ती
नो विशेषमें सूक्ष्म मुक्ति पर्यन्त नित्य है माता
पितासे जन्मा शरीर निवृत्त हो जाताहै पंचम
हाभूत वा भस्म अथवा मल हो जाताहै ॥ ३९ ॥

मूलम्

पूर्वोत्पन्नमसक्तन्नियतंमहदा
दिसूक्ष्मपर्य्यन्तम्॥संसरति
निरुपभोगंभावैरधिवासितंलि
ङ्गम्॥४०॥ अन्वयः

सूक्ष्मशरीरंसंसरति कथम्भूतम् पूर्वोत्पन्न
म् असक्तम् नियतम् महदादिसूक्ष्मपर्य्यन्त
म् निरुपभोगम् भावैरधिवासितम् लिङ्ग
म्॥४०॥

टीका

सूक्ष्मशरीरकालक्षणकहतेहैं सूक्ष्मशरीरज
न्ममरणकोप्राप्तहोताहै कैसाहै सृष्टिकेआ
दिमेंपुरुषपुरुषप्रति प्रकृतिकासृजाहै अ
सक्तनाम अव्याहतहै शिलावृक्षमेंभीप्रवे
श करताहै नियतनाम आदिसर्गते प्रल
यपर्यंतनित्यहै महदादिकसूक्ष्मपर्यंतप्र
कृतिसहित उनवीस१९तत्वकाहै षाट्कौशि
कशरीरविनाभोगरहितहै धर्म अधर्मज्ञा
न अज्ञानविराग अविराग ऐश्वर्यअनैश्व
र्य इनआठौंभावकरके अधिवासितनाम
आठौंकेवासनाकरके युक्तहै और प्रकृति
काचिन्हहै॥४०॥

मूलम्

चित्रं यथाश्रयमृते स्थाण्वादिभ्यो विना यथा छाया॥ तद्वद्विना विशेषैर्न तिष्ठति निराश्रयं लिङ्गम् ॥४१॥ अन्वयः

आश्रयमृते यथा चित्रन्न तिष्ठति॥ स्थाण्वादिभ्यो विना यथा छाया न तिष्ठति तथा विशेषैः सूक्ष्मशरीरं विना निराश्रयं लिङ्गम् बुध्यादितत्त्वन्न तिष्ठति ॥ ४१॥

टीका

आश्रय विना जैसे चित्र नहीं रहता है वृक्ष विना जैसे छाया नहीं रहती है तैसेही सूक्ष्म शरीर विना निरालम्ब बुध्यादिक तत्त्व नहीं रहते हैं ॥ ४१॥ मूलम्

पुरुषार्थहेतुकमिदं निमित्तनैमित्तिकप्रसङ्गेन॥ प्रकृतेर्विभुत्वयोगान्नटवद्व्यवतिष्ठते लिङ्गम् ॥ ४२॥ अन्वयः

नटवत् यथा नटः तान्ताम्भूमिकामादाय रामो वा युधिष्ठिरो वा भवति तद्वत् पुरुषार्थहेतुकमिदं लिङ्गम् सूक्ष्मशरीरं व्यवतिष्ठते कथम् निमित्तनैमित्तिकप्रसङ्गेन कस्मात्

प्रकृते र्विभुत्वयोगात् ॥ ४२॥

टीका

जैसे संसार होता है वा जिस कारण से होता है सो कहते हैं जैसे नट लीला के आश्रय कर के रघुनाथजी का स्वरूप वा युधिष्ठिर का स्वरूप होता है तैसही पुरुषार्थ जो भुक्ति मुक्ति ते दोनो हेतु करके युक्त यह लिंगशरीर देवमनुष्यादिक स्वरूप होता है काहे करके तो निमित्त जो धर्म अधर्मादिक और नैमित्तिक जो देवमनुष्यादिकशरीरका संग्रह ते दोनो में आसक्ति करके काहेते लिंगशरीरका यह समर्थ है प्रकृतिके समर्थताके योगते ॥४२॥

मूलम्

सांसिद्धिकाश्चभावाः प्राकृति
कावैकृतिकाश्च धर्माद्याः॥ दृष्टाः
करणाश्रयिणः कार्य्याश्रयिण
श्चकलिलाद्याः॥ ४३॥

अन्वयः

प्राकृतिकाः स्वाभाविका धर्माद्याभावाः सांसिद्धिकाः करणाश्रयिणः दृष्टाः यथा कपिलादीनां च पुनः वैकृतिका नैमित्तिका ध-

र्सांद्धाभावा असांसिद्धिकाः देवतोपासनानु
ष्ठानेनोत्पन्नाः करणाश्रयिणो दृष्टाः यथा प्रा
चेतस प्रभृतिमहर्षीणाम् च पुनः अधर्मा
दयोप्येवं ज्ञेयाः च पुनः कलिलाद्याः का
र्य्याश्रयिणोनाम शरीरावस्था दृष्टाः॥५३॥

टीका

निमित्तनैमित्तिकका विभाग कहतेहैं प्रा
कृतिकनाम स्वाभाविक जो धर्मादिकभाव
सो सांसिद्धिक करणाधीन देखपरताहै जै
से कपिलदेव आदिकको और नैकृतिक-
नाम नैमित्तिक जो धर्मादिक भावसो अ-
सांसिद्धिकनाम देवताके उपासनाकरके
उत्पन्न सोभी करणाधीन देख परताहै जै-
से वाल्मीक आदिक महर्षिको और अधर्मा
दिककोभी ऐसहीजानना और कलिल बुद्बु
द मांस पेश्यण्ड अङ्ग प्रत्यंग ये सब रचना
रूप अवस्था गर्भमें शरीरको और बाल्य-
कौमार यौवन वृद्धादिक अवस्था गर्भसे
बाहर शरीरको देखपरताहै॥५३॥

मूलम्

धर्मेणगमनमूर्द्ध्वं गमनमधस्ता

उद्भवत्यधर्मेण॥ज्ञानेनचापवर्गो
विपर्ययादिष्यतेबन्धः॥४४॥

अन्वयः

धर्मेणऊर्ध्वङ्गमनम्भवति अधर्मेणअव
स्तात् गमनम्भवति चपुनः ज्ञानेन अप
वर्गोइष्यते विपर्ययात नाम अज्ञानात् ब
न्धः इष्यते ॥४४॥ टीका

किसनिमित्तकरके कौननैमित्तिकहोताहै
सोकहतेहैं अधर्मकरकेस्वर्गादिकलोक
में गतिहोतीहै अधर्मकरकेअतलादिक
लोकमें गतिहोतीहै ज्ञानकरके मुक्तिहो
तीहै और अज्ञानसे बंधन होताहै ॥४४॥

मूलम्

वैराग्यात्प्रकृतिलयःसंसारोभ
वतिराजसाद्रागात्॥ऐश्वर्याद
विघातो विपर्ययात्तद्विपर्य्यासः
॥४५॥ अन्वयः

वैराग्यात प्रकृतिलयोभवति राजसात् रा
गात् संसारोभवति ऐश्वर्यात अविघातो
भवति विपर्ययान्नाम अनैश्वर्यात तद्वि
पर्यासोन्नाम इच्छाविघातोभवति॥४५॥

टीका

वैरागसे पुरुष प्रकृतिमें लीन होताहै रजोगुणी रागसेहते पुरुषको संसार होताहै ऐश्वर्यते इच्छा पूरण होतीहै अनैश्वर्यते इच्छा का विघात होताहै ॥४५॥

मूलम्

एष प्रत्ययसर्गो विपर्ययाशक्ति
तुष्टिसिद्ध्याख्यः॥ गुणवैषम्य
विमर्दात्तस्य च भेदास्तु पञ्चाश
त्॥४६॥ अन्वयः

प्रतीयते ऽनेनेति प्रत्ययो बुद्धिस्तस्याः सर्गः एष प्रत्ययसर्गो भवति कः विपर्ययाशक्ति तुष्टिसिद्ध्याख्यः तु पुनः तस्य सर्गस्य भेदाः पञ्चाशत् भवन्ति कस्मात् गुणवैषम्य विमर्दात् ॥४६॥ टीका

धर्मादिक बुद्धिके सर्गको संग्रहत्यागके निमित्त जनावतेहैं यह चार प्रकार बुद्धिकी सृष्टिहै कौन विपर्यय अशक्ति तुष्टि सिद्धिये चारों जिसका नामहै तिसमें विपर्यय अशक्ति तुष्टि इन तीनोंमें धर्म अधर्म अज्ञान वैराग्य अवैराग्य ऐश्वर्य अनैश्वर्य येसात

यथायोग्य अंतर्गत होते हैं सिद्धिमें ज्ञान अंतर्गत होता है और तिस सृष्टिके भेद पचास प्रकारहैं काहेते गुणोंके जो विषमता न्यूनता अधिकता तिनकरके उद्भव अभिभव होनेते ॥४६॥

मूलम्

पञ्चविपर्ययभेदा भवन्त्यशक्तिश्च करणवैकल्यात् ॥ अष्टाविंशतिभेदास्तुष्टिर्नवधाष्टधासिद्धिः ॥४७॥

अन्वयः

विपर्ययभेदाः पञ्चधाभवंति च पुनः करणवैकल्यात् अशक्त्याः अष्टाविंशति भेदा भवन्ति तुष्टिर्नवधाभवति सिद्धिः अष्टधा भवति ॥४७॥ टीका

पचासोंके भेद गणना करतेहैं विपर्ययका भेद पाँच प्रकारहैं तम मोह महामोह तामिस्र अंधतामिस्र जिसको योगशास्त्रमें अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश कहतेहैं और करणोंके विकलताते अशक्तिके अठाईस २८ भेदहैं तुष्टि नव ९ प्रकारहैं सि

द्धि अष्ट८ प्रकारहैं ॥४७॥

मूलम्

भेदस्तमसोऽष्टविधोमोहस्यच्चद
शविधोमहामोहः॥तामिस्रोऽ
ष्टादशधातथाभवत्यन्धतामि
स्रः॥४८॥ अन्वयः

तमसोभेदोऽष्टविधो भवति च पुनः मोहस्य
भेदोऽष्टविधोभवति महामोहो दशविधोभ
वति तामिस्रोऽष्टादशधा भवति तथा अ-
न्धतामिस्रोऽष्टादशधा भवति ॥४८॥

टीका

अब पांचो विपर्ययका भेद कहतेहैं तम ना
म अविद्याके भेद आठ प्रकारहैं अव्यक्त म
हत् अहंकार पंचतन्मात्र ये आठौं प्राकृतत
त्वोंमें आत्मबुद्धि होये ते मोहनाम स्मिताके
भेदभी आठ प्रकारहैं अणिमा महिमा लघि
मा प्राप्ति प्रकाशिता ईशिता वशिता-
अवशिता ये आठौं ऐश्वर्यको पायके-
यह ऐश्वर्य हमारा नित्यहै ऐसा अभि
मान करनेते महामोह दश प्रकारहैं शब्द
स्पर्श रूप रस गंध ये पांचो विषयोंको -

दिव्य अदिव्य भेद करके दश प्रकार होनेते तिसमें राग आशक्तिरूप महामोह भी दशप्रकार हैं और तामिस्र अठारह १८ प्रकार हैं दश जो शब्दादिक विषय विषयके उपायरूप जो आठ अणिमादिक ते अठारहों १८ के प्रतिघात होनेसे जो द्वेष सो तामिस्र भी अठरह प्रकार हैं ऐसही अंधतामिस्र भी अठारह १८ प्रकार हैं पूर्वके कहे भये शब्दादिक और अणिमादिक जो अठारह १८ विषय तिनके उपघातके निमित्त जो असुरादिनते भय सो अभिनिवेशरूप अंधतामिस्र भी अठारह प्रकार हैं और ये पांचो अविद्याके अर्थ श्रीधरस्वामीने भागवतमें ऐसा कहा है आत्माकेस्वरूप नहीं जानना सो तम देहादिकमें अहंकारबुद्धि करना सो मोह विषयभोगकी इच्छा सो महामोह विषयके प्रतिघात होयेते जो क्रोध सो तामिस्र विषयादिकके नाश होनेसे अपना नाश मानना सो अंधतामिस्र एही अर्थ विष्णुपुराणका सिद्धांत है ॥ ४८ ॥ मूलम्

एकादशेन्द्रियवधाः सहबुद्धिव

धैरशक्तिरुद्दिष्टा॥सप्तदशवधा·
बुद्धेर्विपर्ययात्तुष्टिसिद्धीनाम्·
॥४९॥ अन्वयः

बुद्धिवधैःसह एकादशेन्द्रियवधाः अशक्ति रुद्दिष्टा कतिबुद्धेर्वधाःसप्तदशबुद्धेर्वधाभव न्ति कथम्भूताः तुष्टिसिद्धीनां विपर्ययाः॥
॥४९॥ टीका

अठाईसप्रकारअशक्तिकहतेहैं बुद्धिवधस हितएकादशइंद्रियोंकावधअशक्तिकहा· तीहै कितनेबुद्धिकेवधहैं सतरह१७हैं कैसे हैं नवतुष्टिऔरआठसिद्धिकेविपर्ययरूप हैं ॥४८॥ मूलम्

आध्यात्मिकाश्चतस्रः प्रकृत्युपा·
दानकालभाग्याख्याः॥बाह्या·
विषयोपरमात्पञ्चनवतुष्टयो
भिमताः॥५०॥

अन्वयः

तुष्टयोनवअभिमतासम्मताभवन्तिकाः चतस्रः आध्यात्मिकाः किंसञ्ज्ञकाः प्रकृ त्युपादानकालभाग्याख्याःबाह्याःपञ्चक· स्मात् विषयोपरमात्॥५०॥

टीका

नव प्रकार तुष्टि कहते हैं तुष्टि नव प्रकार की
हैं यह सांख्य के आचार्यों का संमत है कौन हैं
चार प्रकार आध्यात्मिक हैं क्या नाम हैं प्रकृ
ति उपादान काल भाग्य जिनका नाम है और
बाह्य तुष्टि पांच प्रकार की हैं शब्दादिक पांचो वि
षयों के उपराम होने से जो होती हैं आध्यात्मि
क चारों तुष्टि का लक्षण कहते हैं जैसे कोई -
उपदेश किया कि अविवेक और विवेक दोनो
प्रकृति का परिणाम है और दोनो को प्रकृति
करती है ध्यान अभ्यास करने का कुछ प्रयो
जन नहीं है यह सुनकर शिष्य को जो तुष्टि
सो प्रकृति नाम तुष्टि है पुनः कोई कहा कि सं-
न्यास लेने हीं से मुक्ति होती है ध्यान अभ्यास
का क्या प्रयोजन है यह सुनकर उपादान नाम
तुष्टि होती है कोइ कहा कि काल के आधीन -
जैसे सुख दुःख होता है तैसही काल पायके
बंध मोक्ष भी होते हैं साधन करने का क्या का
म है यह सुनकर जो संतोष होना सो का-
ल संज्ञक तुष्टि कहाती है और कोइ कहा
कि सुख दुःख बंध मोक्ष सब भाग्य से होते हैं

उपाय करनेसे कुछ नहीं होता यह सुनकर साधनको छोड़ देना सौभाग्यसंज्ञक तुष्टि होतीहै और नवतुष्टिका नाम शास्त्रोंमे क्रमसे कहतेहैं अंभ सलिल ओघ वृष्टि चारौं आध्यात्मिक तुष्टिका नामहैं और द्रव्यके अर्जन रक्षण क्षय भोग हिंसा ये पाँचो दोष देखकर जो तुष्टि सो पार सुपार पार पार अनुत्तमांभ उत्तमांभ कहातीहै ॥ ५० ॥

मूलम्

ऊहः शब्दोऽध्ययनं दुःखविघातास्त्र
यः सुहृत्प्राप्तिः ॥ दानंच सिद्धयोऽ
ष्टौ सिद्धेः पूर्वोऽङ्कुशस्त्रिविधः ॥ ५१ ॥

अन्वयः

सिद्धयोऽष्टौ भवन्ति काः सिद्धयः अध्ययनम् च पुनः शब्दः ऊहः सुहृत्प्राप्तिः दानम् त्रयो दुःखविघाताः इति पूर्वः पूर्वोक्तः विपर्ययाशक्ति तुष्टिरूपः त्रिविधः सर्गः सिद्धेः करिण्याः अंकुशः निवारकः अत एव हेयः ॥ ५१ ॥

टीका

अब गौण मुख्य भेदकरके और हेतु हेतुमद्भावकरके अष्टप्रकार सिद्धिहैं तिसमें आ

यकी अध्ययन रूपा सिद्धि केवल हेतु है और अंतके तीनो दुःखके विघात रूपा सिद्धि केवल हेतुमती हैं मध्यके चार सिद्धि हेतु हेतुमती दोनो हैं विधिपूर्वक गुरुसे अध्यात्मविद्या की अक्षर राशी ग्रहणकरना अध्ययन नाम सिद्धि तारक हाती है अर्थ ग्रहण करना शब्दनाम सिद्धि सुतारक हाती है ये दोनो श्रवणके अंतर्गत हैं ये दोनो में संशय करके पूर्व पक्ष निराकरण करके शास्त्रानु उत्तर पक्ष स्थापनकरना ऊहानाम सिद्धि तारक हाती है जिसको वेदांती मनन कहते हैं गुरु ब्रह्मचारीके साथ संवाद करके अर्थको दृढ करना सुहृत्प्राप्तिनाम सिद्धि रम्यक कहाती है वासना संशय विपर्यय रहित आदर पूर्वक दीर्घकाल करके यथार्थ विवेक ज्ञान की प्राप्ति दाननाम सिद्धि महा मुदित कहाती है और तीन प्रकार मुख्य सिद्धि दुःख त्रय विघात रूप हैं जिनका नाम प्रमोद मुदित मोद मान कहते हैं ॥ ५१ ॥

मूलम्

न विनाभावैर्लिङ्गं न विना लिङ्गे-

नभावनिर्वृत्तिः॥ लिङ्गाख्योभावाख्य
स्तस्मात्द्विविधःप्रवर्त्ततेसर्गः॥५२॥

अन्वयः

भावैर्धर्मादिभि र्विना लिङ्गंनभवति लिङ्गेन-
विनाभाव निर्वृत्ति र्नभवति तस्मा ल्लिङ्गाख्यः
भावाख्यः द्विविधः सर्गः प्रवर्त्तते॥५२॥

टीका

भोग्यरूप शब्दादिक तन्मात्र विना अथवा भो
गस्थान स्थूल सूक्ष्म शरीर विना भोगरूपपुरु
षार्थ सिद्ध नहीं होसक्ताहै ताते तन्मात्रका सर्ग
होनाचाहिये ऐसही भोगोपकरण अन्तः कर
ण इंद्रिय विनाभि भोग सिद्ध नहीं होसक्ताहै
और धर्मादिक विना इंद्रिय और अपवर्गका-
कारण विवेक भी सिद्ध नहीं होसक्ताहै ताते ध
र्मादिकरूप प्रत्यय सर्गभी होना चाहिये ताते
ग्रंथकार कहतहैं धर्मादिकके सृष्टिविना तन्मा
त्रकी सृष्टि नहीं होतीहै और तन्मात्रके सृष्टि
विना धर्मादिक की सृष्टि नहीं होतीहै ताते त
न्मात्र सर्ग धर्मादिकसर्ग दोनो होतेहैं॥५२॥

मूलम्

अष्टविकल्पोदैवस्तैर्यग्योन्यश्च

पञ्चधाभवति॥मानुषश्चैकविधः
समासतोभौतिकःसर्गः॥५३॥

अन्वयः

दैवः देवसर्गः अष्टविकल्पोभवति तैर्यग्योन्यः पञ्चधाभवति मानुषः मनुष्यसर्गः एकविधो भवति समासतोभौतिकःसर्गः त्रिविधोभवति ॥५३॥

टीका

देवसर्ग आठप्रकारहैं ब्राह्म प्राजापत्य ऐंद्र पैत्र गांधर्व यक्ष राक्षस पैशाच तिर्यग्योनि पांचप्रकारहैं पशु मृग पक्षी सरीसृप स्थावर मनुष्यसर्ग एकप्रकारहै ब्राह्मणत्वादिक जाति छोड़कर चारोंवरणका एक आकार होनेते संक्षेपते भौतिकसर्ग तीन प्रकारहैं सो आगेके श्लोकमें कहतेहैं ॥५३॥

मूलम्

ऊर्ध्वंसत्त्वविशालस्तमोविशाल-
श्चमूलतःसर्गः॥मध्येरजोविशा
लोब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तः॥५४॥

अन्वयः

ऊर्ध्वं द्युप्रभृति सत्यान्तोलोकः सत्त्वबहुलो भवति तमोविशालश्च सर्गो मूलतो भवति-

रजो विशालः सर्गो मध्ये भवति कथम्भूतः सर्गः ब्रह्मादिस्तम्बपर्य्यन्तः ॥५४॥

टीका

अधिक सात्विक सर्ग ब्राह्म प्राजापत्य ऐंद्र-पैत्र गांधर्व यक्ष राक्षस पैशाच ये आठ प्रकारके देवसर्ग ऊपर स्वर्गलोकमें हैं अधिक तमोगुण सर्ग पशुआदिक नीचेको हैं अधिक रजोगुण सर्ग मनुष्यादिक मध्य पृथिवीमें हैं ब्रह्मासे आदिलेके स्थावरपर्यंत सर्गतीन ही प्रकारहैं ॥५४॥

मूलम्

तत्र जरामरणकृतं दुःखं प्राप्नोति
चेतनः पुरुषः॥ लिङ्गस्याविनिवृत्ते
स्तस्माद्दुःखं स्वभावेन ॥५५॥

अन्वयः

तत्र शरीरादौ चेतनः पुरुषः जरामरणकृतं दुःखम्प्राप्नोति कुतः लिङ्गस्याविनिवृत्तेः यतः पुरुषाद्भेदाग्रहात् लिङ्गधर्मानात्मन्येवाध्यस्यति तस्मात् दुःखं स्वभावेन प्राप्नोति ॥५५॥

टीका

शरीरादिक विषे जरामरण निमित्तिक दुःख चेतनपुरुष प्राप्त होता है काहेसे लिङ्ग शरीर

को आत्मासे पृथक् नहिं होनेसे और लिंगशरीरको पुरुषसे अभेद ग्रहण करनेते लिंगशरीरका धर्म आत्मामें मानताहै ताते दुःखस्वभावही करके पुरुषमात्र होताहै ॥ ५५ ॥

मूलम्

इत्येष प्रकृतिकृतो महदादिविशेषभूतपर्यन्तः ॥ प्रतिपुरुषविमोक्षार्थं स्वार्थइव परार्थ आरम्भः ॥ ५६ ॥

अन्वयः

इत्येष आरम्भः सर्गः प्रकृतिकृतः कथंभूतः महदादिविशेषभूतपर्यन्तः किमर्थम् प्रतिपुरुषविमोक्षार्थम् कइव स्वार्थेयथा तथा परार्थे- आरम्भः ॥ ५६ ॥ टीका

यह तन्मात्र सर्ग प्रकृतिका कियाहै कैसाहै महत्तत्त्वसे आदिलेके पृथिवीपर्यंत चौबीस २४ तत्वकाहै काहेकेनिमित्तहै पुरुष पुरुष प्रतिमोक्षके निमित्तहै किसकेनांईहै अपने वास्ते जैसे कोई आरंभकरे तैसे परायेके अर्थहै ॥ ॥ ५६ ॥

मूलम्

वत्सविवृद्धिनिमित्तं क्षीरस्य यथा प्रवृत्तिरज्ञस्य ॥ पुरुषविमोक्षनिमि-

त्तं तथा प्रवृत्तिः प्रधानस्य ॥५७॥

अन्वयः

वत्सविवृद्धिनिमित्तं यथा अज्ञस्य क्षीरस्य प्रवृत्तिर्भवति तथा पुरुषविमोक्षनिमित्तं प्रधानस्य प्रवृत्तिर्भवति ॥५७॥

टीका

अचेतनकोभी प्रयोजनकरके कार्यमें प्रवृत्ति देखपरतीहै सोकहतेहैं वत्साके वृद्धिके अर्थ जैसे जडक्षीरकी प्रवृत्तिहोतीहै तैसे पुरुषके मुक्तिकेअर्थ प्रकृतिकी प्रवृत्ति होतीहै ॥ ॥५७॥

मूलम्

औत्सुक्यनिवृत्यर्थं यथा क्रियासु
प्रवर्त्तते लोकः ॥ पुरुषस्य विमोक्षा
र्थं प्रवर्त्तते तद्वदव्यक्तम ॥५८॥

अन्वयः

यथा औत्सुक्यनिवृत्यर्थं लोकः क्रियासु प्रवर्त्तते तद्वत् तथा पुरुषस्य विमोक्षार्थमव्यक्तम्प्रवर्त्तते ॥५८॥ टीका

जैसेइच्छाके निवृत्यर्थ सबजीवकर्ममें प्रवृत्तहोतेहैं तैसेपुरुषके मोक्षकेअर्थ प्रकृति-सृष्टिमें प्रवृत्तहोतीहै ॥५८॥

रङ्गस्यदर्शयित्वा यथानिवर्ततेन
र्तकीनृत्यात् ॥ पुरुषस्यतथात्मा
नंप्रकाश्यनिवर्त्ततेप्रकृतिः॥५९॥

अन्वयः

स्थानेन स्थानिन उपलक्षयति यथारङ्गस्य रङ्गस्थानिनः नर्तनादिकं दर्शयित्वा नर्तकी नृत्यात् निवर्तते तथा पुरुषस्य आत्मानं शब्दादिविषयरूपम्प्रकाश्य प्रकृतिः निवर्तते ॥५९॥

टीका

जैसे रंगस्थानके पुरुषोंको नाच गानादिक देखलायके नर्तकी नृत्यते निवृत्तहोजातीहै - तैसे पुरुषोंको शब्दादिक विषयरूप आत्माको देखायके प्रकृति निवृत्त होजातीहै ॥५९॥

मूलम्

नानाविधैरुपायैरुपकारिण्यनु
पकारिणःपुंसः॥गुणवत्यगुण
स्यसतस्तस्यार्थमपार्थकंचरति
॥६०॥

अन्वयः

यथा अगुणस्य अनुपकारिणः स्वामिनो गुणवान् उपकारी भृत्यो निष्फलाराधनं करोति तथा गुणवती उपकारिणी प्रकृतिस्तस्य

पुंसः अर्थं अपार्थं चरति कथंभूतस्य तस्य अगुणस्य अनुपकारिणः सतः कैः नानाविधैः उपायैः ॥ ६० ॥

टीका

जैसे निर्गुण अनुपकारी स्वामीको गुणवान् उपकारी सेवक निष्फल आराधन करताहै तैसे गुणवती उपकारिणी प्रकृति निर्गुण अनुपकारि पुरुषोंका प्रयोजन नाना प्रकार उपाय करके व्यर्थ करतीहै ॥ ६० ॥

मूलम्

प्रकृतेः सुकुमारतरं न किञ्चिदस्तीति
मे मतिर्भवति ॥ या दृष्टास्मीति पु
नर्न दर्शनमुपैति पुरुषस्य ॥ ६१ ॥

अन्वयः

प्रकृतेः सुकुमारतरं किञ्चित् नास्तीति मे मतिर्भवति या प्रकृतिः पुरुषेण दृष्टास्मीति हेतोः पुनः पुरुषस्य दर्शनं न उपैति ॥ ६१ ॥

टीका

जैसे नर्तकी नृत्यसे निवृत्त होकर पुनः पुरुषके इच्छासे नृत्यादिक करतीहै तैसे प्रकृति भी पुनः सृष्टि आदिक करतीहै यह शंका दूरक

तर

प्रकृतिमें अत्यंत लज्जा मान दूसरा कोई नहीं है यह हमारी संमति है पुरुष हमको देखलि या इस लज्जासे जो प्रकृति पुरुषके सन्मुख न हीं होती है ॥६१॥ मूलम्

तस्मान्न बध्यतेऽद्धा न मुच्यते नापि
संसरति कश्चित ॥ संसरति बध्य
ते मुच्यते च नानाश्रया प्रकृतिः ॥
॥६२॥ अन्वयः

यस्मात् पुरुषः अगुणः अपरिणामी तस्मा त् अद्धा साक्षात् कश्चित् पुरुषः न बध्यते न संसरति न मुच्यते अपितु प्रकृतिरेव नाना श्रया सती बध्यते संसरति मुच्यते ॥६२॥

टीका

जाते पुरुष अगुण अपरिणामी है ताते सा क्षात कोई पुरुष न बंधता है न जन्मता मर ता है न मुक्त होता है किंतु प्रकृति ही नाना रू पहो कर बंधती है जन्मती मरती है मुक्त हो ती है ये तीनो प्रकृतिके धर्म पुरुषमें उप चार होते हैं जैसे नोकरका जय पराजय मालिकको कहा जाता है ॥६२॥

मूलम्

रूपैः सप्तभिरेव तु बध्नात्यात्मान
मात्मना प्रकृतिः॥ सैव च पुरुषा
र्थं प्रति विमोचयत्येकरूपेण॥६३॥

अन्वयः

प्रकृतिः आत्मना आत्मानम् बध्नाति कैः स
प्तभिः रूपैः धर्मादिभावैः किमर्थम् पुरुषार्थं
प्रति भोगापवर्गप्रति च पुनः सा एव प्रकृतिः
एकरूपेण तत्वज्ञानेन आत्मानं विमोचयति
॥६३॥

टीका

बंधनादिकके साधन कहतेहैं प्रकृति आप
हीअपनेको बांधतीहै काकरके धर्म अध
र्म विराग अविराग ऐश्वर्य अनैश्वर्य अज्ञा
न ये साता धर्मादिक भावकरके काहेके
निमित्त भोग अपवर्गरूप पुरुषार्थके निमित्त
और सोई प्रकृति एक तत्वज्ञानकरके आत्मा
को छोडायदेतीहै॥६३॥

मूलम्

एवंतत्वाभ्यासान्नास्मि न मे नाह
मित्यपरिशेषम्॥ अविपर्ययाद्वि
शुद्धं केवलमुत्पद्यते ज्ञानम्॥६४॥

अन्वयः

एवं तत्वाभ्यासात् ज्ञानमुत्पद्यते कथम्भू
तम् अविपर्ययाद्विशुद्धम् केवलम् नास्ति
नमे नाहमिति निष्क्रियोहम् निष्फलोहम् निः
संगोहमिति अपरिशेषम् ॥६४॥

टीका

यह प्रकार तत्वों के अभ्यास करनेसे प्रकृ
ति पुरुषके साक्षात्काररूप ज्ञान उत्पन्न होता
है कैसा है संशय विपर्ययसे रहित विशुद्ध है
प्रकृतिसे रहित केवल आत्मसम्बन्धि ज्ञान है
आत्मामे कर्तृत्व नहीं है ताते हम निष्क्रिय हैं
आत्माको स्वामित्व नहीं है ताते हम निष्फल है
आत्मा स्वामी नहीं है ताते हम निःसंग हैं
यह ज्ञानते कोई ज्ञान बाकी नहीं है जिसके
जाने बिना बंधन होय ॥६४॥

मूलम्

तेन निवृत्तप्रसवामर्थवशात्सप्त
रूपविनिवृत्ताम्॥ प्रकृतिम्पश्य
तिपुरुषः प्रेक्षकवदवस्थितः स्व
च्छः॥६५॥ अन्वयः

तेन ईदृशेन तत्वसाक्षात्कारेण पुरुषः प्रकृ
तिं पश्यति कथम्भूतः सन् प्रेक्षकवत् अव

स्थित इति निष्क्रियः स्वच्छः सन् कथंभूतां प्रकृतिम् निवृत्तप्रसवाम् अर्थवशात् सप्तरूपविनिवृत्ताम् ॥६५॥ टीका

यह प्रकार तत्वसाक्षात्कार करके पुरुष प्रकृतिको देखता है कैसा होकर तमासा देखनेवाले केनांई स्थिर निष्क्रिय राजसी तामसी मलिनता वृत्तिसे रहित होकर और प्रकृति कैसीहै भोग विवेक दोनोंको उत्पन्न करके उत्पन्न करनेते निवृत्त होगई है और विवेकज्ञानरूप अर्थके सामर्थ्य ताते धर्म अधर्म अज्ञान वैराग्य अवैराग्य ऐश्वर्य अनैश्वर्य ये सातोरूप जिसके निवृत्त हो गये हैं ॥६५॥ मूलम्

दृष्टामयेत्युपेक्षक एको दृष्टाहमि-
त्युपरमत्यन्या ॥ सति संयोगेऽपि
तयोः प्रयोजनंनास्ति सर्गस्य ॥६६॥

अन्वयः

मया प्रकृतिर्दृष्टा इति एक आत्मा उपेक्षको भवति अहं पुरुषेण दृष्टा इति अन्या प्रकृतिः उपरमति ततः तयोः संयोगेऽपि सति सर्गस्य प्रयोजनं नास्ति ॥६६॥

टीका

णा समाख्यातम् ॥ स्थित्युत्पत्तिप्र
लयाश्चिन्त्यंते यत्र भूतानाम् ॥ ६९ ॥

अन्वयः

इदं गुह्यं पुरुषार्थज्ञानं परमर्षिणा कपिलाचा
र्येण समाख्यातम् यत्र यस्मिन् ज्ञान निमि
त्ते भूतानाम् स्थित्युत्पत्तिप्रलयाश्चिंत्यन्ते॥
॥ ६९ ॥ टीका

यह गोप्य पुरुषार्थज्ञान कपिलदेवजीने क
हाहै जिसज्ञानके अर्थ सर्वप्राणियोंके स्थि
ति उत्पत्ति प्रलयोंको ऋषि सब वर्णन कर
तेहैं ॥ ६९ ॥ मूलम्

एतत्पवित्रमग्र्यमुनिरासुरयेऽनु·
कम्पया प्रददौ ॥ आसुरिरपि पञ्च
शिखाय तेन च बहुधा कृतं तन्त्र
म् ॥ ७० ॥ अन्वयः

एतत् ज्ञानम् पवित्रम् दुःखत्रयहेतोः पाव
नम् अग्र्यम् सर्वेभ्यः पवित्रेभ्यः मुख्यम्
मुनिः कपिलः अनुकम्पया आसुरये प्रद
दौ आसुरिरपि पञ्चशिखाय प्रददौ चपुनः
तेन पञ्चशिखाचार्येण बहुधा तन्त्रम् कृ
तम् ॥ ७० ॥ टीका

अध्यात्मादिक तीनों दुःखते पवित्रकरनेवा
ला पवित्रोंमे श्रेष्ठ इसज्ञानको कपिलदेव
जीने दयाकरके आसुरि ऋषिको दिया
और आसुरिऋषि पंचशिखाचार्यको दिया
जोपंच शिखाचार्यने सांख्यतंत्रबहुत प्रका
रकियेहैं ॥७०॥ मूलम्

शिष्यपरम्परयागतमीश्वरकृष्णे
नचैतदार्य्याभिः॥संक्षिप्तमार्यम
तिनासम्यग्विज्ञायसिद्धान्तिनम्
॥७१॥ अन्वयः

च पुनः ईश्वर कृष्णेनशिष्यपरम्परयागतम् ए
तत् सांख्यशास्त्रं सम्यग् विज्ञाय सिद्धान्ति
तम् कथंभूतम् संक्षिप्तम् काभिः आर्याभिः
आर्य्याछन्दोभिः कथम्भूतेन आर्यमतिना ॥
॥७१॥ टीका

और ईश्वरकृष्ण आचार्यने शिष्यपरंपरा क
रके प्राप्त यह सांख्यशास्त्रको अच्छेतरहसे
जानकर सिद्धांतशास्त्रकियाहै कैसाहै संक्षि
प्तग्रंथहै काहेकरके आर्याछंदकरके कैसे ई
श्वरकृष्णहैं समीचीन जिनकीबुद्धिहै ॥७१॥

मूलम्

सप्तत्यां किलयेर्थास्तेर्थाः कृत्स्न
स्यषष्टितंत्रस्य॥ आख्यायिका
विरहिताः परवादविवर्जिताश्चा
पि॥७२॥ अन्वयः

कृत्स्नस्य षष्टितन्त्रस्य ते एव अर्था भवन्ति कि
लेति प्रसिद्धौ तेके सप्तत्यां येर्थाः सन्ति कथं
भूता आख्यायिका विरहिताः च पुनः परवा
दविवर्जिताः॥७२॥ टीका

संपूर्ण षष्टितंत्र सांख्यशास्त्रके सोई अर्थ प्र
सिद्ध है कौन सत्तरकारिकामें जो अर्थहैं वे
सेहैं कथावार्ताकरके रहितहैं दूसरे आचार्य
केवादकरकेरहितहैं॥७२॥

तथाचभोजराजवार्तिके

प्रधानास्तित्व मेकत्व मर्थवत्व मथान्यता प
रार्थञ्च तथानेक्यं वियोगो योगएवच शेषवृ
त्ति रकर्तृत्वं मौलिकार्थाः स्मृतादश॥१॥
विपर्य्ययः पञ्चविध स्तथोक्तानवतुष्टयः॥क
रणानामसामर्थ्यमष्टाविंशतिधामतम्॥२॥
इतिषष्टिपदार्थानामष्टभिः सह सिद्धिभिः॥से
यंषष्टिपदार्थोक्तिःकथिता परमर्षिभिः॥३॥
सकलशास्त्रकथनान्नेदंप्रकरणमपितुशास्त्रा

र्थमेवेदमितिसिद्धम् एकत्वम् अर्थवत्वम् परार्थंच प्रधानमधिकृत्योक्तम्॥ अन्यत्वम् अकर्तृत्वम् बहुत्वंच पुरुषमधिकृत्य॥ अस्तित्वं योगो वियोगश्चेति उभयमधिकृत्य॥ शेषवृत्तिनाम स्थितिरितिस्थूलसूक्ष्ममधिकृत्योक्तम्॥ टीका

प्रधानास्तित्वमित्यादिककायहअर्थहै॥असदकरणात् यहकारिकाकरके प्रकृतिके अर्थकार्यकोसत्यताकहकर॥भेदानांपरिमाणात् येपांचोहेतुकरके प्रधानके अस्तित्वनाम सत्यताकहे॥ विपरीतमव्यक्तम् इससेप्रधानको एकत्व कहे ॥प्रदीपवच्चार्थतोवृत्तिः पुरुषार्थ एवहेतुः पुरुषार्थहेतुकमिदम् प्रतिपुरुषविमोक्षार्थम् येसबस्थानमें प्रधान और प्रधानकेकार्यको अर्थवत्वनाम प्रयोजनवत् कहैं॥परिणामतःसलिलवत् इससे प्रधानको अन्यता कहे ॥संघातपरार्थत्वात् इससे प्रधान और प्रधानकेकार्यद्रसरेकेअर्थहैं॥ सोकहे॥ हेतुमदनित्यमव्यापि इससे महदादिकको अनेकताकहे॥जननमरणकरणानाम् इसकारिकासेपुरुषको अनेकताक

है॥ सैवञ्च विशिनष्टि पुनः इसकारिकासे सत्कार्य और प्रधानका पुरुषसे वियोग कहे॥ तस्मात् तत्संयोगात् इससे महदादिक लिंगका और पङ्ग्वन्धवदुभयोरपिसंयोगः इसकारिकासे प्रधानकापुरुषसे योग कहे॥ अन्योन्याश्रय इससे और समुद याति इससे गुणोंके विशेषवृत्तिनाम अंग अंगीभाव॥ अकर्तृभावश्च यहकारिकाकरके पुरुषका अकर्तृभावकहे॥१०॥ विपर्ययाशक्तितुष्टिसिद्ध्याख्यः इसकारिकासे आरंभकरके विपर्ययादिकपचास पदार्थकहे॥ यह प्रकार षष्टि ६० पदार्थकहे प्रकृतिः महान् अहंकार शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध पंचतन्मात्र षोडश १६ विकार पुरुष ये सब तत्त्व प्रकृते महान् यहकारिकाकरके कहे॥ पंच विपर्ययभेदाः यहसे समान॥ भेदास्तमसोऽष्टविधः इससे विशेषविपर्ययकेस्वरूप कहे॥ एकादशेन्द्रियवधाः इस कारिका करके अठाईस २८ अशक्ति कहीहैं॥ बाधिर्यम् कुष्टिता अन्धत्वम् जडता अज्ञता मूकता कौण्यम् पंगुत्वम् क्लैब्यम् उदाव

र्त्तित्वम् १० मन्दता ११ अम्भवैकल्यम् १२ सलिल वैकल्यम् १३ ओघवैकल्यम् १४ महौघवैकल्यम् १५ पारवैकल्यम् १६ सुपारवैकल्यम् १७ पारपारवैकल्यम् १८ अनुत्तमाम्भवैकल्यम् १९ उत्तमाम्भवैकल्यम् २० तारवैकल्यम् २१ सुतार वैकल्यम् २२ तारतार वैकल्यम् २३ रम्यकवैकल्यम् २४ महामुदितवैकल्यम् २५ प्रमोद वैकल्यम् २६ मुदितवैकल्यम् २७ मोदमानवैकल्यम् २८ ॥ आध्यात्मिकेश्चतस्रः यह कारिका करके नवतुष्टि कही हैं अम्भ सलिल ओघ महौघ पार सुपार पारपार अनुत्तमाम्भ उत्तमाम्भ इति ऊहः शब्दोध्ययनम् यह कारिका करिके सिद्धि कही हैं ॥ तार सुतार तारतार रम्य महामुदित प्रमोद मुदित मोदमान इति षष्टिपदार्थाः कथिताः ॥ सम्पूर्ण षष्टितंत्र कहनेसे यह कारिकाप्रकरण नहीं है किन्तु सम्पूर्ण सांख्यशास्त्र है यह सिद्ध भया

श्रीरामं रामदासांश्च नमस्कृत्य पुनः पुनः ॥ साङ्ख्यव्याख्यार्णवापारात्सुखं पारंगतोस्म्यहम्

यह पुस्तक सांख्यकारिका श्रीपंडित वाचस्पति मिश्रका संस्कृत टीका कियाहुआ वा अनेक दूसरी टीका भी बहुत कालसे रही परंतु विद्यार्थियों को सुगमतासे अभिप्राय ज्ञात होना पदौंका व्याकरण के रीतिसे लगाकर भाषा समझना महाकठिन रहा अनेक विद्यार्थी मेरे पास पढ़ते रहे जिन की अभिलाषा हुई कि भाषाटीका होकर छप जाय जिस्में विद्यार्थियों को श्लोक लगजाय और पदार्थके अभिप्राय का यथार्थ ज्ञान शीघ्रही होजाय निदान स्वात्मारामने उन कामंत्रणा उत्तम जान अल्पदिवसौंमें संपूर्ण कारिका के मूल प्रति सुधा अन्वय तथा भाषाटीका भाषा व्याकरणके रीति विरुद्ध विशद उलथान करके केवल संक्षेप मूलके विभक्तियों के अनुकूल सूधे देशी बोलचालमे पंक्ति लगजानेके अनुसार भाषा करके उक्तग्रंथ को बालबोधिनी टीकानाम सुशोभित करके अपने विद्यार्थियोंका मनोरथ सिद्ध कीया और सर्वसाधारण अपेक्षक व्यक्तियोंको अतिसुलभसे मिलनेके हेतु छापना विचार अपने अयोध्याविदेही नामक यंत्रालयमें संभूषणांकित करके प्रकाशित कीया

एक्ट २५ सन् १८६७ के मौजिब रजष्टरी हुईहै दूसरे जगह मिल नहीं सक्ती है